बुनियादी शिक्षा में श्रम

हम अक्सर अनुभव करते है कि अनेक कथा, लोकवार्ता, किवंदतीयां और लोकगीत पहले, जहां, पहली बार कहे गये उसके बाद वह लोगो की मुंह जबानी पिढ़ी दर पिढ़ी चलते है। पर उसके शब्द या भाव में कई बरसों बाद धीरे धीरे बदलाव, जो बहुत सुक्ष्म होता है, वह आ जाता है। इससे मूल बात कहानी या लोकगीत थोड़ा बदल जाता है और उसके अर्थ बदल जाते है उसे अपभ्रंश होना कहते है। किसी मूल बात या बरसों पहले किसी के द्वारा रखे गये विचार भी वक्त के चलते अपभ्रंश हो जाते है। **'बुनियादी शिक्षा में श्रम'** यह विचार गांधीजी के बाद इतना अपभ्रंश हुआ कि उसका हार्द ही खो गया और बुनियादी शालाएं उद्योग और श्रम के साथ शिक्षा के जुड़ाव के हार्द को भूल कर सिखाने का तरीका अपभ्रंश करती चली गई। श्रम के साथ यांत्रिकता जुड़ गई और करना है उसी वजह से करते चले गये। आईये, इसीलिए उस विचार की समझ बनाने की हम कोशिश करे।

कैसे अपभ्रंश हुआ :

प्लेटो के अनुसार किसी सरकार के अस्तित्व का नैतिक आधार शिक्षा है । **जो सरकार लोगो की शिक्षा का कार्य भली प्रकार से नहीं करती वह अपनी स्थिति के नैतिक आधार खो देती हैं** । यह बात से सर्वसम्मत होगे की अभी तक की कोई भी सरकार शिक्षा मे ऐसा कोई बदलाव नहीं ला पाई जीससे भारतीय समाज नैतिक रूप से स्वांवलबी बने या यू कहे तो चले कि सरकार चाहती ही नहीं थी कि भारतीय समाज मे समान रूप से जाति –पाति धर्म को छोडकर श्रम का सम्मान समान रूप से हो । बुनियादी शिक्षा मे श्रम में यह विचार के अनुकरण की कोशिश हुई पर उसके पिछे के उद्देश्य ओर विचार आधे अधूरे ओर दिशा हिन थे ।

- 1964 – 66 मे कोठारी कमीशन ने उद्योग द्धारा शिक्षा की बात रखी उसमे कहा गया कि शिक्षण मे उत्पादक प्रव्त्ति दाखिल होनी चाहिए ।
- 1977 में ईश्वर भाई पटेल समिति में कहा शाला के समय पत्रक में समाज उपयोगी उत्पादन कार्य को स्थान दिजिए । शाला के पत्रक का 20 प्रतिशत कालांश उसे देने का तय हुआ ।
- 1986 में राजीव गाधी की नई शिक्षा निति मे श्रम ओर शिक्षा के कूछ पहलु को छुने की कोशिश थी ।
- 1992 में प्रोफसर यसपाल द्धारा बिना बोझ की पढाई में कार्यानुभव द्धारा शिक्षा की बात थी ।
- 1997 में यूनेस्को में 21 वी सदी के शिक्षण के नीव के चार स्तम्भ के बारे मे कहा :
  1. जीवन विकास के लिए शिक्षा ।
  2. ज्ञान के लिए अध्ययन ।
  3. किया के लिए अध्ययन ।
  4. समूह जीवन ओर अध्ययन ।

  इस चार बात में भी बुनियादी शिक्षा की फिलसूफी थी ।

इस तरह से श्रम ओर श्किा का किसी ने इनकार नहीं किया , पर जो कुछ किया गया वो गांधी जी की बुनियादी शिक्षा में श्रम की परिकल्पना से बहुत ही विखण्डित रूप लिये हुआ था इसी को अपभ्रंश होना कहते हैं । कमीयों के अनेक कारण हो सकते हे पर मुख्य बात यह है कि बुनियादी शिक्षा में श्रम के साथ ज्ञान, का गांधी दर्शन के सुत्रो की मिमांसा करके पेडागोगी की परिभाषा मे ढालने का काम हम नहीं कर पाएं । कुछ लोग जानकार थे अनुसंधान व प्रयोग करते रहते थे वह लोग बुनियादी शिक्षण

पद्यति के प्रति अहोभावना वाला भावनाशील सबंध मात्र रखते थे । वह लोग आत्मनिष्ठ मुल्यांकन में विश्वाश करने वाले रहे ।

श्रम द्धारा शिक्षण के क्रातिकारी सूत्र को किसी ने यह समझाा कि शाला मे सिर्फ उद्योग कराने में ही शाला शिक्षण हो गया । किसी ने समाज उपयोगी उत्पादन कार्य को समय पत्रक में स्थान देकर घर में रखने कि सुशोभन की सामग्रीयां भर बनवाई या तो लडके जैसा काम लडको को कराया व लडकियों को सिलाई कढाई सिखाकर इति श्री माना । कोई शालाओं में सोचा गया विद्युत संबधी जानकारी वायरीग करना विद्युत उपकरण सुधारना आदि थ्योरी व प्रयोग द्धारा करवा देते हैं ,लिखवा देते हैं परिक्षा दे दो ओर हो गया । अपने–अपने अभिगम व अपने – अपने अर्थघटन इस तरह से हम यह देख नहीं पाएं की बुनियादी शिक्षा में श्रम के पिछे ग्रामउद्योग समूह जीवन,ग्रामसंपर्क अस्प्श्यता निवारण, कौमीएक्य, प्रौढशिक्षण, वनवासीयों के साथ जुडाव,स्त्री उन्नती , लोकशाही , सामाजीक न्याय , सर्वोदय समान तक राष्ट्रियता जैसे अनेक रंग निहित हैं यही बुनियादी शिक्षा में श्रम को लिये हुए गांधी जी की राजकीय आर्थिक सामाजिक फिलसुफी थी । पुरे हाथी को समझने कि कोशिश करने वाले अंध जनो जैसी हमारी दशा रही परिणाम स्वरूप बुनियादी शिक्षा ओर श्रम लोकमानस में गहरी पेठ नहीं बना पाया । हम श्रम को जातिवादं से उपर उठाकर भी नहीं देख पाए । सबसे बडा कराण शिक्षा के अनेक लक्ष्यों में से एक मात्र लक्ष्य नौकरी पाना या उच्च पद पर बैठकर पैसा कमाना ही रहा । पिछले दस सालो में भुमण्डलीकरण के चलते शिक्षा का व्वसायीकरण हो चुका है किताबी ज्ञान का महत्तव बढा कुर्सी में बैठकर काम करने वाले बढे ,दिमाग नाना प्रकार की सुविधा खोजने में लगा ओर हमारे रोजमर्रा के सामान्य कार्य के लिये हम अलग से दुसरे इन्सान को नौकरी पर रखकर दासता को बढावा देने में लगे हैं । शिक्षा बिल्कुल आराम से , आराम में और आराम के लिये ही दी जा रही हैं । शिक्षक कुर्सी पर बैठता है,विद्यार्थी बैंच पर । आराम से शिक्षण दिया जाता हैं आराम से शिक्षण लिया जाता हैं । पालक भी अपनी संतान को ऐसे ही विद्यालय में भरती कराना चाहते है जहां उसे ज्यादा से ज्यादा सुविधा मिले कमर झुकानी नहीं पडे ,शिक्षा में देह ओर बुद्धि का कोई भी सामजस्य नहीं है दूर्भाग्य यह की शरीर श्रम करने वाले के पास ज्ञान नहीं ओर जिनका कथित बौद्धिक विकास हुआ वे शरीर श्रम नहीं करते । ऐसा आज राहु केतु वाला हमारा समाज है एक ओर केवल सिर ही है हांथ पावं नही दुसरी तरफ हांथ पांव है लेकिन सिर नहीं । ज्ञान ओर कर्म कहीं एक साथ देखने को नहीं मिलता । बहुराष्ट्रिय कंपनी के दफतरो में कुछ हैण्ड्ज होते है कुछ हैड होते हैं हैड कभी भी नहीं चाहते कि हैण्ड्ज हैड बने । ऐसी स्थिति मे शिक्षितो की दशा धोबी के कुत्ते समान है । सामान्य तौर पर आजकल मिडियम आफ इन्सट्रक्शन अर्थात जानकारी (कथित शिक्षा) का माध्यम क्यां हो इसकी चर्चा करते हैं लेकिन मिडियम आंफ नालेज की चर्चा होनी चाहिए वह नहीं करते ज्ञान का माध्यम तो कर्म ही हो सकता हैं मां अपने बच्चे को कुछ सिखाती है तो वह कर्म से ही सिखाती है नही की किताबो से ।

शिक्षा की गांधीवादी परिकल्पना :

उनका स्पष्ट मानना था कि शिक्षा कोई वस्तु,पदार्थ,या बीज नहीं जो किसी को दी ओर उसने ले ली । यह एक प्रकार की चेतना है जो निरंतर बहने वाली गतिशिल शक्ति का स्वभाविक प्रवाह है । वह कहते रहे बालक एवं मानव शरिर के मन एवं आत्मा मे निहित सर्वश्रेष्ट तंत्वो का विकास वही शिक्षा । श्रम के द्धारा मिली हुई सिख या शिक्षा कभी न भुलने वाला अनुभव होता हैं । शरीर , मस्तिष्क ओर आत्मा मे पाएं जाने वाला गुणो का इससे चतुमुर्खी विकास होता हैं । उनका विचार था कि इससे भारत राजनैतिक , आर्थिक एवं सामाजिक दास्ता के बधंनो से सर्वथा मुक्त होगा । वे साक्षरता को शिक्षा नहीं मानते थे वे इसे ज्ञान का माध्यम भी स्वीकार नहीं करते थे । उनका मानना था की साक्षरता न तो शिक्षा का अंत है न ही प्रांरभी यह तो एक साधन है जिसके द्धारा शिक्षा दी जा सकती हैं । श्रम से बालक के व्यक्तित्व में सतुलन आता हैं । समाज व देश के नवनिर्माण के लिये सतुलित दृष्टिकोण वाले व्यक्तियों की जरूरत हैं । किसी भी प्रकार की अतिवादिता से देश व समाज को नुकसान ही हैं । श्रम के बारे में गाधीजी ने वर्धा सम्मेलन में स्पष्ट कहा था कि बुनियादी शिक्षा में श्रम यह बात पढाई के साथ – साथ कोई धंधा सिखा देने का साधन नहीं हैं ।

श्रम यानी क्या ?

श्रम का शाब्दीक अर्थ देखे तो श्रम याने कोई मेहनत ।

कभी कभी प्रश्न उठते है कि एक तरफ हम बाल मजदूरी बंध करवाने के लिए आंदोलन करते है, और दुसरी तरफ बुनियादी शालाओं में बालकों की शिक्षा को श्रम से जोड़ते है ऐसा विरोधाभास क्यों?

यहां मजदूरी का अर्थ भी समझना जरूरी हो जाता है। मजदूरी यानी सेवा के लिए हम दाम ले और उसी से जीवन यापन का प्रयत्न हो या वह मेहनत एक वह मेहनत एक तरह से मजदूरी हो सकती है।

दाम देकर खरीदी गई सेवा मजदूरी ही हो सकती है। वह मेहनत जो बीना दाम या वस्तु लिये समीष्ट के लिये की जाएं उसे श्रमदान कहते हैं । बालक जो शाला मे श्रम करेगा वह कुछ सीखने के लिये ,अपनी क्षमता व कौशल की वद्धि के लिये करता हैं वह श्रम मजदुरी नहीं हैं ।

बालक और श्रम

बुनियादी शाला में बालश्रम बहुत छोटे तौर पर होता है और वह उत्पादक भी हो सकता है। बालक अपने घर में जो काम करता है या अपने खेत में छोटा–मोटा कार्य करके घर वालों का हाथ बंटाता है वह बाल बालश्रमिक की श्रेणी में नहीं आ सकता।

हम बचपन से धीरे–धीरे हमारा खुद का काम जैसे अपने बर्तन साफ करना, कपड़े धोना, रसोई करना, फटे–टूटे कपडे सिलना या अन्य काम करना, सिखते है यह सब परिवार के साथ मिलकर होता है, आगे चलकर हम हमारे बालक को भी स्वयं का काम करना सिखाते है। क्या उससे बालक बाल श्रमिक हो जाता है ? कतई नहीं। ऐसा श्रम तो हमे स्वावलंबन देता है। यानी खुद का काम स्वयं करना, दुसरों पर आधारित न होना। ऐसी ही बात बुनियादी शिक्षा में श्रम की है। वहां भी बालक जो श्रम करता है वह स्वयं हाथ–पैर, दिमाग व अन्य अंगों के विकास के लिए करता है।

1942 में जामिया–मिलिया में डॉ. जाकिर हुसैन ने अखिल भारतीय नई तालिम के दुसरे सम्मेलन में शिक्षा श्रम की व्याख्या इस प्रकार की है– 1. व्यक्ति के लिए **'कर्म'** (श्रम) सिध्धांत अनिवार्य है और उसकी मान्यता उसी रूप में मिलनी चाहिए यह जरूरी है कि उसको पाठयक्रम का एक विषय अन्य विषयों से जोड़कर रखा जाए। 2. व्यक्ति के लिए **'कर्म'** (श्रम)का कार्य तालिका में निश्चित समय निर्धारित होना चाहिए। 3. व्यक्ति के लिए **'कर्म'** (श्रम) द्वारा उत्पादन होना चाहिए। और अंत में कुछ ऐसे लोग भी है जो **'कर्म'** (श्रम) को ईश्वर का वरदान मानते है। ऐसे लोग ऐसा मानते है कि बालको के श्रम से कोई उत्पादन न भी हो तो उसकी चिंता नहीं करनी चाहिए क्योंकि बच्चे मजदूर नहीं है उनका श्रम तो उनकी रचनात्मक शक्तियों का घौतक है।

शिक्षा काम या श्रम से ही हो सकती है इसका क्या मतलब ? सोचिए शिक्षा होती कैसे है ? मस्तिष्क का विकास होता कैसे? यह ऐसे जैसे शरीर का विकास अच्छे पोषणयुक्त व मनभावन रूचिकर खाने से होता है उसे पचाने के लिए शरीर को हिलाना–डुलाना पड़ता है और शरीर का विकास होता है। शरीर स्वस्थ रहता है उसमें बल आता है। दिमाग का विकास भी मस्तिष्क की कसरत से होता है। मस्तिष्क को भी अच्छी खुराक चाहिए और वह होती है मस्तिष्क द्वारा बनाई हुई चीजें। खाने की वस्तुएं, पहनने के कपडे, श्रृंगार, तौर–तरीके रीति–रिवाज, परम्पराएं, संस्कृति, चिंतन–मनन, कानून कायदे, कला, साहित्य, कविता, दर्शन, दया, माया, करूणा, मंदिर, मस्जिद, गिरजे, गुरूद्वारा, सब दिमाग की सोची और बनाई हुई चीजें है।

केवल जानकारी से मस्तिष्क का विकास यानी शिक्षा नहीं होती शिक्षा के विचार में हमें जानकारी और ज्ञान में भी फर्क करना आना चाहिए। जानकारी दो तरह की होती है। 1. वह जानकारी जो किसी ने हासिल की है और हमें बता दी, सिर्फ बता दी। 2. वह जानकारी जो हमने अपनी खोज से अपनी मेहनत से हासिल की है वह हमारे अपने दिमाग से तैयार की हुई है। ऐसे ही किसी काम का कौशल या महारत भी दो तरह के हो सकते है एक तो खाली यंत्रवत कौशल, जो श्रम के साथ किसी की नकल

करने से आती है, दूसरी महारत वह जिस में हम काम की तह तक पहुंचने के लिए उस कार्य के क्यों और कैसे को समझते है।

उदाहरण के तौर पर दस्तकारी या हस्तकला के काम यंत्रवत नहीं सिखाये जाना चाहिए। बल्कि बालक दस्तकारी खेती या कोई श्रम की प्रत्येक प्रक्रिया को समझे। उसके कार्य कारण को समझे। और स्पष्टता के लिए मूल उद्योग खेती का उदाहरण लेते है, कक्षा के बालक खेत में निंदाई, गुडाई या बोवाई करते हुए मौसम, पौधे का स्वरूप, फूल पत्तीयों के भेद, फसल चक्र के बारे में जाने पौधो के जड़, तना, डाली, फुल, पत्ती की कार्य रचना के आंतरिक व बाहय स्वरूप को जाने। पौधो की वृद्धि, संख्या, बीज, फसल, बोते समय बीजो की खरीदी, कटाई के बाद फसल की बिक्री के साथ गणित के पहलूओं को समझे। फसल समाज के लिए कितनी पोषक साबित होगी, पर्यावरण, पानी आदि की चर्चा शिक्षक के साथ बैठकर करे। भौगोलिक व इतिहासिक रूप से यह फसल कहां हुई थी अपने देश में यह फसल व अन्य देशों में यही फसल की तुलनात्मक बाते शिक्षक खेत में कार्य करते करवाते बालको के साथ करे।

यही श्रम द्वारा शिक्षा हो सकती है। उसी तरह अन्य उत्पाद भी बालक तैयार करे व उपरोक्त क्रिया से शिक्षा अर्जन करे और वह उत्पादन समाज में उपयोग के लिए बेचे भी जाये समाज उसका उपयोग करे तभी बुनियादी शिक्षा में श्रम की सार्थकता साबित हो सकती है अन्यथा नही।

यही बात को डॉ. जाकिर हुसैन ने **एज्यूकेशनली प्रोडक्टीव वर्क** के नाम से पुकारा था यह श्रम मस्तिष्क व हाथ के संयोजन का है सारी शक्तियां इस पर मिल जाती है। बालक उलझता है, सुलझता है, गिरता है, संभलता है, रूकता है, फिर बढ़ता है और यो बिना किसी के मजबूर किए उसमें मेहनत मशक्कत कर जान लगाकर अपने मानसिक व शारिरीक विकास में लगने की उसे आदत पडती है। **'हरिजन'** (अखबार 18 सितंबर 1937) में गांधीजी ने लिखा था ''**शाला में श्रम इस निष्ठा से करना होगा कि भारत के गांवों की आवश्यकताएं क्या है तथा उसे अनुकूल इस शिक्षा को अनिवार्य बनाने के लिए मेहनत करनी होगी स्वावलंबी बनना होगा''।**

श्रम से स्वावलबंन याने क्यां ?

स्वावलबंन किसका ? शाला का , व्यक्ती का या शाला चलाने वाली संस्था का यह भी स्पष्ट होना जरूरी हैं । श्रम की आर्थिक हैसियत को ज्यादा जोर देने का गांधीजी व जाकिर साहब ने कभी नहीं कहा । गांधीजी ने कहा था विद्यालय मे जो सामान तैयार होगे उसे चतुर शिक्षक कच्चे माल को कम से कम नुकसान करके अच्छी वस्तु पैदा करेगे तो विद्यालय का चालु खर्च अधिकांश रूप से निकाला जा सकता है किन्तु शर्त यह है कि राज्य विद्यालयो में उत्पादन की हुई वस्तुओं को खरीदने का दायित्व ले सके तो थोडे बहुत अर्थ मे विद्यालय स्वावलंबी होगे । लेकिन सबसे बडा स्वावलंबन यहा पर बालक का होगा जो श्रम से बहुत कुछ सिखकर अपने जीवन में आगे स्वावलम्बी हो सकता हैं । जाकिर साहब ने साफ – साफ कहा है कि शिक्षा में काम का स्थान रखा गया हैं उसकी आर्थिक हैसियत व शौक्षिक हैसियत के बीच में स्पष्ट सतुलन रखने की जरूरत होगी । शौक्षिक उद्देश्यो की अवेहलना कर शिक्षक बच्चे से अधिक श्रम कराने में अपना ध्यान व शक्ति लगाले तो वह स्वावलंबन की दिशा में प्रयत्न नहीं हैं । यदि काम का चुनाव शिक्षा की दृष्टि से किया जाएंगा एवं समाज की आवश्यकता के अनुकुल होगा तो ज्यादा अच्छा हो सकता हैं समाज के लोग आपस में मिलजुलकर भोजन एवं आवास,शिक्षा एवं स्वास्थ्य संबधी आवश्यकताओं की पुर्ति करे यही श्रम का लक्ष्य होना चाहिए । आजादी के आदोलन के समय मे तकली ओर चरखे की बात श्रम के साथ इसीलिये रखी गई थी कि हमारा समाज कम से कम वस्त्र के मामले मे स्वावलंबीत हो । अग्रेजो के उपर की निर्भरता टुटे इस तरह से यह असहकार आदोंलन का भी पहलु था ।

लेकिन अब अभी के समय मे यह देखना है कि भारतीय समाज में अब के सजोगो में ऐसी कौन–कौन सी समस्याएं है उसके आधार पर बुनियादी शालाओं में प्राथमिक कक्षाओं से उच्चतर कक्षाओं के लिए श्रम या श्रम आधारित गतिविधियां होनी चाहिए । समुदाय, प्रांत ,जलवायु सामाजिक आर्थिक ,

भौगोलिक स्थितियों के साथ श्रम के स्वरूप में बदलाव हो सकता हैं उसी के उपर हमे ज्यादा सोचने की जरूरत हैं ।

प्रक्षाली देसाई